बदलता कुमाऊँ

[कुमाऊँनी भाषा में]

लेखक :

हरीश चन्द्र देवतला

ग्राम मल्ला मोहणा, पो. ओ. मासी, जिला अल्मोड़ा

प्रकाशक :

कुमाऊँनी साहित्य सदन

३००५, बाजार सीताराम, दिल्ली-६

प्रथम सस्करण २०००] अप्रैल १९८३

Rs 10-00

ॐ

जहां सुमति तहां सम्पति नाना।
जहां कुमति तहां विपति निधाना॥

बदलता कुमाऊँ

[कुमाऊंनी कविता में]

लेखक :
हरीश चन्द्र देवतला
ग्राम मल्ला मोहणा, पो. ओ. मासी,
जिला अल्मोड़ा (उ. प्र.)

प्रकाशक :
कुमाऊंनी साहित्य सदन
३००५, बाजार सीताराम, दिल्ली-६

प्रथम संस्करण १०००] अप्रैल १९८३

शुभ कामना

मुझे यह लिखते हुए हर्ष हो रहा है कि श्री हरीश चन्द्र देवतला की कविता 'बदलता कुमाऊँ' पढ़ने का अवसर मिला। इनके मन में पर्वतीय जीवन व उस धरती के प्रति स्नेह है, जिसे इन्होंने इस प्रकार कविता के रूप में व्यक्त किया है। मैं इनकी सफलता की कामना करता हूँ।

डा० नारायण दत्त पालीवाल
दिल्ली प्रशासन

लेखक की आगामी रचना
माँ की ममता
पढ़िये।

दो शब्द

ईश्वर या परमात्मा ने संसार में छोटे से छोटे एवं बड़े से बड़े प्राणियों को जन्म दिया है। उसकी (परमात्मा) की निगाह में छोटे बड़े को न देखते हुए सभी में आत्मा एक दी हुई है। परमात्मा सभी में व्याप्त है। छोटे तथा बड़े होने का अवसर उन्हें अपने कर्मों के फलस्वरूप मिलता है। परमात्मा ने अनेक प्राणी मात्र को जन्म देने के फलस्वरूप मानव भी उन्हीं प्राणियों में एक है। इस प्रकार अपनी जन्मभूमि सभी को प्यारी होती है उसी प्रकार हमारी जन्मभूमि 'उत्तराखण्ड' में है वहाँ की मान मर्यादा दिनों दिन जब मान उत्थान के पथ पर आगे अग्रसर हो रहा है। उतना ही अपनी जन्म भूमि के प्यार को भी भूलता आ रहा है। इस प्रकार क्योंकि वहां का वातावरण शहर से भिन्न होता है। इसलिए उसका उत्थान न होकर अपनी जन्म भूमि का पतन हो रहा है यह क्यों? क्योंकि वहाँ की जनता में एक अपना संगठन नहीं है। मानव का संगठन होना ही नितान्त आवश्यकता है। बगैर संगठन के जीना संसार में एक पशु मात्र ही है क्योंकि मानव एक सामाजिक प्राणी है तो उसमें समाज की भाँति ही सामाजिक गुण होने चाहिए। इन्हीं कारणों से जो मानव अपनी जन्म भूमि से लगाव कम कम करने जा रहे हैं उसके लिए मैं एक किताब लिख रहा हूँ। जिससे उसमें अपने बदलते हुए मातृभूमि की याद आयेगी और एक किताब मैं चन्द दिनों में ही प्रकाशित करने जा रहा हूँ उसका शीर्षक "माँ की ममता" इसमें भी कुमाऊँनी भाषा में बड़ी बड़ी दिलचस्प बातें लिखी गई हैं। कृपया मेरा यह पहला ही उत्साह है। आगे को मेरा आप सभी कुमाउनी जन प्रेमियों से सहयोग मिलता रहा तो यह किताब भी प्रकाशित हो जाएगी। कृपया इसमें जो भी गलतियां हों उनको माफ करना ईश्वर आपको सदा सहाय रखे।

देवलसा

भूमिका

श्री हरीश चन्द्र देवतला हमारी कुमाऊंनी बोली के नवेदित कवि साहित्य मैदान में आए हैं। इनका प्रथम प्रयास है। इन्होंने अपनी लेखनी द्वारा आज से ३५ वर्ष पहले कुमाऊं में जमीन और आसमान के समान परिवर्तन दर्शाया है इसी कारण से पुस्तक का शीर्षक 'बदलता कुमाऊँ' रखा है।

वैसे तो संसार ही परिवर्तनशील है। लेकिन कुमाऊं की भूमि जो कि देव भूमि कही जाती मानी जाती है। उस भूमि में रोजाना काम आने वाली हर जरूरत पूरी होती थी। सिर्फ एक नमक और कपड़ा छोड़कर कोई भी वस्तु खरीदनी नहीं पड़ती थी। नाज दालें, फल, फूल, दूध, दही, सब्जियां कोई भी चीज बाजार से नहीं लेनी पड़ती थी। आज का समय धीरे-धीरे यहां तक बदल गया है कि नाज और पानी की भी कमी हो गई है। इतनी उन्नति अवश्य हुई है कि सड़कों का जाल पूरे कुमाऊं में फैल गया है। व्यापार भी उन्नति पर है। बिजली पानी की व्यवस्था भी हमारी भारत सरकार पहुंचाने की कोशिश कर रही है। फिर भी कुछ गांव ऐसे हैं जो बिजली तो दूर रही पानी का पहुंचना भी कठिन है। आशा पर संसार कायम है धीरे-धीरे सब कुछ होगा। मैं लेखक के इस प्रयास की सराहना करता हूं। आशा करता हूं कि भविष्य में ऐसी रचनाओं को समाज के सम्मुख प्रकाश में लायेंगे।

शुभ कामनाओं सहित !

पुरुषोत्तम दत्त पालीवाल

सुपुत्र

स्व. चिन्तामणी पालीवाल

संयोजक : कुमाऊँनी साहित्य मण्डल, दिल्ली

सरस्वती वंदना

सरसोती माता हणी मेरी नमस्कारा ।
हाथा जोड़ी बिन्ती कनु तुमरा दरबारा ।।
पंचनामा देवा तुम है जया दयाला ।
गरीब मूरख छौं मैं करी दिया ख्याला ।।
गांव का जो इष्ट देवा धन तेरी माया ।
पड़णी सुणणी सबा अमरा है जया ।।
भल कई रछ ईष्टा भल लै करण ।
देशा ले प्रदेशा जानु त्य सहारा रहण ।।
जथां लैं बिपता अई लिनो त्यर नामा ।
फुल पाति चड़णक हमर लै कामा ।।
सबु पै नजरा कये जो रहछ जति ।
अबटा का बट धरी भली दिया मति ।।
त्यर लै भरस पारि कागज लेखनू ।
गरीबी जीवन म्यर हाथ जोड़ी कनु ।।
जो कुछा गलति हैली मैं माफ करण ।
वरदान दिये देवी आधीना लेखण ।।
जग जगा मज हग मन्दिरा लै थान ।
दुनि मजा सब जग तुमर लै मान ।।
कथीना लै को करुछ सिद्धि लकी कामा ।
कामा लै पछोना होछ पैली त्यरनामा ।।

भगवती भुमियां तुमा है जया दयाला ।
जमानै की बाता भया करी लिया ख्याला ।।
दुनी मजा जतु देवो मैं जोड़नू हाथ ।
घर बणा जथां जोछा दिया तुम साथ ।।
किताबा लिखनु देवी इकासी सनमा ।
तुमलै पावणु ईष्टा दी रछ जनम ।।
जतै लै गलता हल म्यर दिया साथ ।
अधीना लिखण रयु नौं पुराण बाता ।।

●

स्तुति मां शेरा की

ओ मां शेरा बाली मां तेरी हैजो जै जै कारी ।
मैं त्यरी शरण ऐरूं य दुखिया भारी ।
अष्ट भुजा देबी मां तु पहाड़ों में रैछ ।
जथाँ लै विपता अई तु ठाड़ी हैजैछ ।।
जग जगा जैछ त्यरी शेरै की सबारी ।
मैं त्यरी शरण ऐरूँ य दुखिया भारी ओ...
लाखों याँ दुखिया आनी त्यर दरबारा ।
य हमरी नाव माजी तू लगैया पारा ।।
अरजा लिबेरा आनी सब नर नारी ।
मैं त्यरी शरण ऐरु य दुखिया भारी ।।...
नव दुर्गा नाम माजी तुमर मसूर ।
जो [illegible] शरण आँछ दुख कैंछै दूर ।।

तुमुलै मां दुनिया का राक्षस मारी ।
मां त्यरी शरण मजा य दुनिया सारी ।
ओ मां शेरा वाली माँ त्यरी है जो जै जैकारी ।
मैं त्यरो शरण ऐरु य दुखिया भारी । ओ"

卐

अपना परिचय

जनम हेतु सब कह पितु माता ।
करम शुभा शुभ देहि विधाता ।।

थोड़ा बाता भाई लोगो आपण लेखनु ।
गरीब क च्यल छौ मैं हाथ जोड़ी कनु ।।
पढ़िया लिखिया निछों निछ ग्याना ध्याना ।
हे ईष्टा सुमति दिया विश्नु भगवाना ।।
पहाड़क रणी मैंछौ मोहणा में गौछ ।
देवतला जात मेरी हरीशचन्द्रा नौछ ।।
मासी में डांखाणा म्यर पट्टी छू गेवाड़ा ।
अल्मोड़ा जिल म्यर रंगील पहाड़ा ।।
दिया छैं बैंहणी म्यरा भाई छौ में एका ।
बिपता जै याद ऐछ लै जाछ उदेखा ।।
तीन साल नान छिमैं बौज्यू मरी गया ।
छव्ट छव्टा भाई बैणी निराश है गया ।।
बैणी म्यरा दिया ठुल्ला मैं छों छव्ट भाई ।
करमै की रेख भया को सकौंछ टाई ।।

बुड़ीया छु ईज मेरी कमजोरा भारी ।
बौज्यू मरी बटी सबा इजैं जुम्मेवारी ।।
भौत दुख द्यख भागी य मेरी इजैलै ।
विपता का टैम पारी साँथ नी दी कैल ।।
मैत की तरफा बटी ईजा छु दुखिया ।
आम दुख नी देखियन जाँले ज्यौन जिया ।।
ईजा मैत भाई नींछु आम छु बुड़िया ।
मकोटै की याद ऐछ भरी आछ हिया ।।
इजा म्यरा चार बैणी भाई क्वे नी हय ।
आठ साल भाई इजक करमें नी हय ।।
मैत यादा इजै ऐछ भरी जांछ हिया ।
को कथैं संचले नहैं जालै ज्यान जिया ।।
चार बैणी इजका छैं सबु हैरौ भल ।
आघिना ऊ इष्ट देवा जाणी कस कल ।।
च्येलिया बिबाया इजलै म्यर ब्या लै कय ।
भौत लै बिपता देखि कस कस हय ।।
निभैं है इजलै मेरो सारी जुम्मेवारी ।
आपु लोगों आर्शीवाद भलो मिली ब्वारी ।।
एक बैणी दौला म्यरी एक निरकोटा ।
सुरे में सरासा म्यर सिमलचौर मकोटा ।।
हीराबल्लभ त्याड़ी म्यर सौर ज्युक नामा ।
ऐल ऊ रिटायर छैं घर कनी कामा ।

दिय म्यरा छव्टा सावा तीन जेठी सासु ।
मोटरै की लैन जैछ सुरे ग्वैला खाश ।।
ठूलो कैंजा दौला म्यरी छोटो पालो रैंछ ।
सबु हैबे छोटी कैंजा अमै सेवा कैंछ ।।
छोटी कैंज घर म्यर खाश लै बजीना ।
अमै सेवा हणी कैंजा नी हनी पछीना ।।
अस्सी बरसे बुड़िया छु मकौटै की अमा ।
रात दिना दुख दिनु सब झूण हमा ।।
एक छु पुस्याणा मेरी घर कैं बुड़िया ।
पुस्याणी का दुख देखी भरा आँछ हिया ।।
छोटी लै उमर मजी है गेई विधवा ।
ईश्वरा का हाथ पारी सबु कुछ कवा ।।
नीम धरमें पारा रैंछ य म्यरी पुस्याणा ।
जप तप दान कैंछ पाठ लै पुराण ।।
भल नामा चलै रछ मैंता का धरमा ।
धन्य हो य पतिब्रता नारी क धरमा ।।
एक म्यरा खाश मित्र ज्वयों मज रनी ।
देवता जागेरी लगै सबु भल कनी ।।
खिमानन्दा नाम तैक भौत मेलदारा ।
कर्दीना जै मिलि गोय खुशी है अपारा ।।
बड़े छन नेक ख्याला जागेरी लगानी ।
आपण लै दुख छोड़ी मैंसों काम जानी ।।

दुनिया का भल मैंसा चलै रौछ नामा ।
सब बीर देवतों का इनरा बसमा ।।
ईतु बाता भाई बन्दो आपण लै लिखा ।
विपता जै याद ऐछ लै जाछ उदेखा ।।
जो कुछा गलतिया हली मैं माफी मांगनू ।
दिली मजा प्राईवेटा काभ में करनु ।।

प्यासा गांव मोहणा

मेरे प्यारे भाई बहनों अभी तक आपने मेरी आप बीती पढ़ी होगी लेकिन थोड़ा अब आप सब पर बीती सुनो जो कि पानी की घोर समस्या होते हुए भी हमें मजबूरी में जीना पड़ रहा हैं मैं आशा करता हूँ हमारे परम हितैषी दयालु सज्जन कोई तो हम प्यासों की ओर सरकार का ध्यान दिलायेगा। विशेषकर श्री हरीचन्द रावत, श्री नारायण दत्त तिवारी जी से हमारा निवेदन है बल्कि हमें पूर्ण विश्वास है कि जल संकट से हमें छुटकारा दिलाने का भसक प्रयत्न करेंगे।

सबु हैं निवेदना छू जोड़ी बेर हाथ ।
अब सुणी लियो एति पाणी की आफता ।।
सरकारा रोजै दिछै पाणी आश्वासना ।
एक मैलौ पाणी ल्यानै बौणी गेई नना ।।
दूर दूर पाणी ल्यहें बुड़ बाड़ो जानी ।
बल्दा का मारिया जसा रुनै घरा आनी ।।
पाणी ल्यानै ल्याने भागी हम परेशाना ।
क्वे सजना दिश्रो भागी हमु उज्याणी ध्याना ।।

हमरी अरजा छ य सरकारै हणी ।
कसीका कटनी दिना मोहनतोई पाणी ।।
सब सरकार कैंछ है पशु पालन करो ।
हमरा ईलैका कैंछ बिन पाणी मरो ।।
पिहणी ले पाणी निछ खाहेणी बिलैका ।
तीस गोंछ बिन पाणी हमरा इलैका ।।
एक गागर पाणी ल्यहैसे ऊठी बैं जानी ।
पाणी बिना साग जईजा इथां ऊथां चानी ।।
ऐला ठेटा हौंन मजा पाणी की आफता ।
गर्मी में बिन पाणी हैजैंछ कुगता ।
रोजै लगि रैंछ भागी पाणी की अध्यारा ।
उज्याव लै हैनी सकन पाणी की फिकरा ।
पाणी की आफता भागी कां तक लगानु ।
बिन पाणी मछा जसा हम तड़फनु ।।
सन सैंतालिसा मजा देश हौ आजादा ।
बोट लिहै मैं मैं कनी पै निरनी यादा ।।
भैंस गोरु के तिल्य हैजा मैंस लै बिमारा ।
हमु हणी यस कय धन सरकारा ।।
हरीशचन्द्रा रावता ज्यु सुणी लिओ बाता ।
हमर पाणी कतु अर्जी छै तुमरा हाता ।।
कबा तका पाणी आलो साँची लै बताओ ।
हमरा यौ पाणी अर्जी आधीना बढ़ाओ ।।

पाणी लिजी रावता ज्यु कुछ करो तुम ।
हमरी समस्या भागी तुमु कै मालुम ।।
हमु कै रावता ज्यु पैं पुर छ विश्वासा ।
हमरा इलैंका बटी जितिया छा खाश ।।

卐

कुमाऊ की झलक

कुमाऊ इलाक भया कतु भल मान्यों ।
नीचा लै गध्यरों मजा उचा ऊचा डान्यों ।।
ऊंचां ऊंचा डान्यों मजा बाजा लै बुरुसी ।
धारमा भैं बेरा भया कतु भली खुशी ।।
बिना लै बुतिया एति डवा जामी जानी ।
अणीयाँ जणीयाँ लोग सेवा में भै जानी ।।
धन धना भगवाना धन तेरी माया ।
हमरी कुमाऊँ धरती अमरै की काया ।।
गोरु बाछु घास ऐति पाणी लै पिहणी ।
मेहनता करी बैंलै है जांछ खैहणी ।।
और देशा लोग भया उन्नती कै गया ।
हमरा पहाड़ मजा गरीब रै गया ।।
घर बटी दिल्ली आनी नौकरी कैहणी ।
जमीयां नौकरो नी हई जग न रहैणी ।।
आजकल पहाड़ा में सब चीजों सुख ।
मोटरा यो गाड़ी चला आब निछ दुख ।।

अबा ता पहाड़ा मजा सब चीज सजा ।
को जमान पैलि छिय को जमाना आज ।।
पैलिया का बुड़ बाड़ी देख भई आज ।
आज कला हई रछ सेणियों क राजा ।।
आपणी जमानें बाता ऊनु यादा आनो ।
घनघोरा कलयुग में कणो देखिया रै जानी ।।
रुख सुख जस खेंछो फिर लै तगड़ा ।
आजा का जमाने मजा मिजातल उजड़ा ।।
पैलियका लोग भया कतु छिया भल ।
दौड़ा लें रुवेंया छिया एकनी डबला ।।
कपड़ा खद्दरा छिय ऊनें की आंगड़ी ।
पैलिया जमानै हवें आज कतु बड़ो ।।
पैलिका चौसट पैंसा आज रुपे हनी ।
छव्ट छोटा नन्ना जो जें बिड़ी उड़ें जानी ।।
तमा का चौसट पैंसा भौते ज्यादा हछो ।
एकनी दवनी कवें कतु चिजा ऐछो ।।
पैंलि भागी रुपेंय की भौत छी इजता ।
पाठ लै पुराण कैंछी और कैंछी कथा ।।
आजकला रुपैंया की के नैंहै इजता ।
मुनवा बुलबुली चैंनी खट पर ज्वता ।।
तैंवघता दी डबला भौत चीजा ऐछो ।
दूर दूर जाई वेरा मेहनता कैंछी ।।

पेलिया का नना तिना पाई अना ल्येछी ।
फाट पुराण जस मिल सब ऊ पैरेंछी ।।
घनघोरा कलयुग मजा दिमाग यों बड़ा ।
नी पैरन हम कनी फटिया कपड़ा ।।
फटिया कपड़ा कणी धरो दिनी कुणा ।
घन घोर कलयुग भौत अबगुण ।।
जमाना लै बड़ी गोय बड़ी गो मिजाता ।
नईयां जमानै भांगी के लगान्द बाता ।।
फटीया कपड़ा कणी सबा कनो जमा ।
सुलारो नी पैरन कनी ल्याओ बैलबोटम ।
बैलबोटम के हैं च्यला मकें बतें द्धल ।
फाटी पुराण सब पैरा मैंकणी खैंदय्ल ।।
हामुलैं ता बैलबोटम नाम लैं नी सुण ।
घन घोर कलयुग लैं य कस कस कण ।।
हमर लैं जमान भागी कस लैं हनल ।
कभैं आल ऊ जमान मैंकणी खैंदय्यल ।।
पैंलिया का लोग भया रामनगरा जाछी ।
एक मण ब्वज लिवैं घर हणी आंछी ।।
दवनी का भेली ल्याछी एकनी का लुण ।
घनघोरा कलयुग मजा ऐं गोछ निहुण ।।
हमरा जमानैं मजा के कि नैं फिकरा ।
य जमानैं मज देखो सवा लैं अकरा ।।

गुड़क कटुक खांछी मनुवां का रव्टा ।
माव जाई बेरा ल्याछी दी पैंसा का गट्टा ।।
दी पैंसा का गट्ट भागी भौत आई जैंछो ।
सब भाई वेंणी भया मिली बैंटी खैंछो ।।
यां बैंटी राम नगर भौत झण जैंछो ।
नगरा आटई जसा खुट हई जैंछी ।।
ऊ जमान भाई बन्दो भौत मेलदारा ।
एकन क एक गोव चवनी का चारा ।।
एक दिना भाई बन्दो माँऊ जैंण ठरी ।
पेट का लिजिया भागी कसो कवा करी ।।
तीन दिना तक हमा बटपन रय ।
दगड़ी छी साथ मजा कस कस हय ।।
बटा लैं अबटा हया अन्यारी छी राता ।
ऊ जमाना इतु भल के लगानु बाता ।।
बातु बातु मजा भागी हई गे उज्याई ।
सबु का पाराणा भागी ठौर मजा आई ।।
रामनगर आई बेरा खरीद समान ।
यस ऊ जमान छीय लगैं लिग्रो ध्यान ।।
एक मणा ब्वज कणी धरी ली ख्वरमा ।
रूख सुख जस खांछी भोतैं छिया दम ।।
सस्तक जमान छिय नीछी महंगाई ।
घनघोर कलयुग जाणी कां बटी य आई ।।

आपण जमान मजा कस कस दरख ।
घनघोर कलयुगै मजा कस कम ध्वक ॥
आबु सुणी लिओ भाई नईयां जमाना ।
उल्ट सिद जस लिख लगैं लिया ध्यान ॥
ध्यल कौछ बौज्यु हणी कसी बाता कई ।
हमरा जमान मजा मज आई रई ॥
भल हय आई गोय नईयां जमान ।
ख्वर मजा धरो वेरा को ल्याछि समाना ॥
मुसिवतै बात बौज्यु कीहणी लगेंछा ।
मकै नान देखी वेरा तुम लैं ठवौंछा ॥
आपणा जमानै वाता किहैणी लगेंछा ।
रगील जमान ऐरे कस देखी जछा ॥
यां वटिका रामतगर को हमर जाल ।
रगील जमान बौज्यू तुमुकैं खैजाल ॥
माऊ रामनगर बौज्यू आब को जाछ ।
घर बैठी बेरा भागी ग्यों चांवो मगांछ ॥
आज का जमान भया कथैं किहें जानी ।
राशन का ग्यों चावल घर बैठी खानी ॥
कस हई रछ भया पहाड़ इलाका ।
खेती मजा पुर नी हन पै ल्यानी बिलैका ॥
हमुलै नी सुणी भागी राशन का नाम ।
कस लै जमान ऐगो सुणी लियो रामा ॥

पैली पैली सुण जवा आईरछ गल ।
राशन का नाम सुणी मारी गे अकला ।।
को खांछी राशन भया खेतो का ग्यों धान ।
के कण राशन लिवें फट लगै दान ।।
को खाल राशन कैंछी सड़ीया छु नाज ।
को जमान पैली छिया कोजमान आज ।।
को हनल जोगी केछी को खाल राशन ।
घर कणी हई जांछी पेट भरी अना ।।
ग्यौं चावला भौत हछी सागैं की बहार ।
आजा का जमान मजा राशना छा प्यार ।।
राशन का नाम सुणी कामा लै छोड़नी ।
राशन लिहैणी भया सवा लै दौड़नी ।।
राशन दुकान मजा लागि रछ तोल ।
किलो का वजना देखी भट हैजां गोल ।।
किलो का वजन मजि दिया माणी चड़ा ।
महगाई देखी बेरा गरीबा उजड़ा ।।
राशन लै जतु मिल पिसी ल्यानी घटा ।
बेरैऊ खतन हैजा फिर लागा बटा ।।
सैणी नना सब जानी ठूल जानी बैका ।
उधीना राशन नी मिल पै ल्यान बिलैका ।।
घर क लै नाज भया दी मैहण खानी ।
नाज पाणी बितो गोय बिलैका वे ल्यानी ।।

यस हय भाई बन्दों जमाना लै आजा ।
मौमू की निचलनो सौणिया क राजा ।।
भल छी जमाना पैली मिली बटी रैछी ।
बुड़ बाड़ी नना तिना मेहनता कैंछी ।।
उनरी मेहनता भया है जैंछी सफला ।
टैमा टैमा दयो है जाछी नाज होंछी भला ।।
सबा चीजा टैमा पारो हई जेंछी तबा ।
मेहनता कैंछी भैया बुड़ बाड़ी सबा ।।
भल छी जमान भया भल छी बखता ।
को चीजै की बिना भया नी रैछी फगता ।।
सबु मजी मेल छिया भल छिय प्यारा ।
सुणछी भगवान भया उनरी पुकारा ।।
पैलियका लोग भया जैछोया पैदल ।
आजाका जमान मजा मंहगाई कल ।।
अबा सुणी लिओ तुम नइया बयाना ।
पैलिया का बुड़ बाड़ी लगै लिया ध्याना ।।
नी जाना हो रामनगरा समाना लिहणो ।
बजारा ता हई गोछ सबु घरु कणी ।।
डालडा क ध्यों चली र सड़िया लै तेल ।
मोटरा यो बस चला चली रई रेल ।।
ईथां उथां जथां जानो बैठनी गाड़ीमा ।
को जाल हमर कनो कराई ठाड़ीमा ।।

गाड़ीमा जणी लोगां भरी रई सीटा ।
गाड़ी मजा जगा नी रनी हैरे कीटा कीटा ।।
गाड़ी मजा बैठी टिकटा लै लिनी ।
जेब क बटुवा निकाली झट पैसा दिनी ।।
पैदला जैहणो भया करनी आलस ।
उ जमान भल छिय य जमान कस ।।
य किताबै पारी भया ध्यान लगै लियो ।
छव्ट छव्ट ननु की तुम बात सुणी लियो ।।
दुकानमा जाई बेरा गटलै बेठनी ।
चहा और समौसु क औडर ले दिनी ।।
चहाक औडर दिनी कुर्सी में भै बेरा ।
गड़बड़ी चहा पीनी यस अन्धेरा ।।
पैलिया जमान मज गुड़क कटका ।
उ जमाने वात सुणी दिल करू धका ।।
घनघोरा कलयुग मजा फसका उड़ानी ।
मंहगाई देखी बेरा समझ नी आनी ।।
पैलीक जमान मज भौते भल मेला ।
मडुवा का रव्ट खैछी झुंगरा का डैला ।।
खुन्डी वाला भेस रैछी वल्द लै भाबरी ।
पुराण जमाना देखी आजै दशा तरी ।।
तै बखता खूब रैछी बकरा ढिपरा ।
भाबरी बल्दों का गवा घना लै नेवरा ।।

तै बखता चली रौछी कपड़ा खद्दरा ।
आजा क मिजात मजा खाली झरफरा ।।
कतु साल चली जाछी कपड़ा लै तबा ।
को बघता पैली छिय को जमान अवा ।।
भल चली रौछी भया मलेसी कपड़ा ।
य जमाना आग लैर दिमाग यो बड़ा ।।
य जमान मज भया मिजाता बहत ।
फैशना निराले हैर कसी लै कहता ।।
फुलों बाव कपड़ा चल रहोंछ सड़ीया ।
सड़िया लै को नी देखन चहैंछ बड़ीया ।।
आज कला कपड़े की इजता नी हनी ।
कुर्ता लै सुलारा हणी सौ रुपया चैनी ।।
सौ रुपै लागणा मजा सस्त ऐरो कनी ।
पैन्टा जै बनौला कय दी सौ रुपै चैनी ।।
नईना जमानै लै य कसी कवा कई ।
पैन्टा की सिणाई ऐला तीस रुपै हई ।।
के कनु हो भाई बन्दो बघतै की बात ।
जतकणी गलता हल म्यर दिया साथ ।।
जस लै कपड़ा हय उस हया दामा ।
बुड़ बाड़ी कणी ऐंजे आपणी लै फामा ।।
ए जमाना ऐल हय अब कस आंछ ।
ए धुणी कपड़ा पैरा रंग उड़ी जाछ ।।

ए बघता ऐंल ऐंरे जाणी कस लै देखनु ।
कपड़ा का हाल भागी कां तक लेखनु ।।
पैलिया जमाना मजा नी छीया मिजाता ।
पुराणी जमाना भया के लगानु बात ।।
ऊनै की आङ्गड़ी रैछी जुटै की घागरी ।
ख्वरा मजा सीन रौंछी पाणी की गागरी ।।
भल छी बखता भया भल छी जमान ।
ऐंला हाल देखी बेरा फट लगै दान ।।
पैंलिया जमाना मजा बोरिया दिसाण ।
य जमानै मज देखो तकिवा सिराणा ।।
गद्दा लै बिस्तरा भागी पलंग बिछानो ।
बजारै की चीज लिवै घर कणी खानी ।।
पैलिया जमाना मजा ग्यौं धानु भकारा ।
आजा का जमानै मजा राशना में प्यारा ।।
तबा कै लै बुड़ बाड़ी मेहनता कैछी ।
साल भरी हैं खेती नाज भितेरा लै रौछी ।।
य बखता मजा भाई चली री मोटरा ।
मोटरै की लेन ऐंगे सबु घर घरा ।।
बदल बखता भाई बदला जमाना ।
घर घरौं मज हैरा बिजली चमना ।।
ऐंल लैके भल मान्यों कुमाऊं में प्यारा ।
जगा जगा खुली रई नई नई कारा ।।

बिजुली का चली रई जग जगा घट ।
गाड़ी मजा बैठी बेरा लागी जानी वट ।।
नाजै कणी झट पिसी बिजुली मशीना ।
को पिसल जानर कनी कै ऐरे अदीना ।।
को कुटल झुंणर कनी को कुटल धाना ।
के बुलैछा सासु यस फट लैंगे दाना ।।
मोटरा में जोंल कनी पिसी ल्यौना चकी ।
एक घन्टमा आई जोंला डर हई कैंकी ।।
पहाड़ा मैदान हैगो मोटरै की लैना ।
पहाड़ा में हैगी आदु सब चीजा चैना ।।
पाणी की इस्कोमा बतो नैधणा गोय पाणी ।
हमरो लै कुमाऊँ की भौत मीठी वाणी ।।
नेधणा बै पाणी गोत गोंनु वारा पारा ।
पहाड़ा का हाल सुणी खुशी है अपारा ।।
पैलिया का बुड़ बाड़ी के जाणछी नला ।
दुर दुर जाई बेरा पाणी ल्यछी बला ।।
आपणी जमानै बाता हमु कें बतानी ।
य रंगील टैम देखी समजा नो आनी ।।
पुराण जमान मजा नी छिया मोटरा ।
माटरै कै देखी बेरा लागी जेछा डरा ।।
पैलिया का बुड़ बाड़ी सोद साद रछी ।।
मोटरै कै देखी बेरा के हनली कछी ।।

पैलिया का बुड़ बाड़ी तमाकु लें पिछि ।
जो आय भिखारी भया माण मुट्ठी दिछि ।।
तैंबघता तमाकु को ह्वका लै भरछी ।
ऐ चिलमा तमाकु कें कतु झणा पिछी ।।
उ जमान भाई बन्दों भौत छीय भल ।
सलाई क खर्च निछी पाड़ीछी अग्यल ।।
भल छी बघता भया भल छीय प्यारा ।
कुमाऊँ अमर हैजो धरती का चारा ।।
धन धना जमाना लै धन तेरी चाला ।
अबा सुणी लियो जरा नौं जमाना हाला ।।
छव्ट छव्टा ननु जेगन बिड़ी लै सिलाई ।
हमरा इलैका मजा के बिड़ी चलाई ।।
कै हैंती लै बिड़ा रनी कै हैंती सिगरेटा ।
बिड़ी जें नी पिय उनुलु नी भरीयन पेटा ।।
बघता बदली गोय क्ये लिखनु हाल ।
अनपढ़ नान छौं मैं करी दिया ख्याल ।।
नईयां जमाना मजा ऐस घर घरा ।
सब चीज सुख हैरे नै हाति फिकरा ।।
गोंनु गोंनु पाणी नैंगो पाणी की बहारा ।
भौत चीजै सुख हैगो धन सरकारा ।।
धन धना सरकारा भल कई रछ ।
काम कहैं मन नी कन भल हई रछ ।।
जतकणी गलतीया हली मैं माफी मांगनु ।
बघता बदली गोय के हाला लेखनु ।।

चाय का रिवाज

सुणी लियो भाई बन्दो चहा का यों हाल ।
खाणपिण पछीनी चैंच पैलो चहा ख्याला ।।
अंगरेजों लै चलाय य चहा क रिवाजा ।
चहा लै बिगड़ी गया हम लोगा आजा ।।
चलै गया अंगरेजा चहा क रिवाज ।
तै बघता हय भागी उनर लै राजा ।।
सुरु सुरु मजा जबु चहा लकी चली ।
लौग जैंछी बजारा में कैंछो के हनली ।।
चहा का डरामा छिया जग जगाँ कणी ।
पिजाओ पिजाओ कबै कय सबु हणी ।।
सुरु सुरु मज भया चहा पिया जबा ।
एकै कणी मिट्ठी लागी आई गया सबा ।।
अणीयां जणीयां लोग सब चहा पिनी ।
चड़कनी चहा हई गडबडी चीनी ।।
य कसीका बनाई हनलो सबा झणा कनी ।
जाणी इमें भाई बन्दो के मसला रनी ।।
पिणीयां लै लोग कैंछो भल इनर सीप ।
कसी चिजा बनै रैछ पिणा में अजीब ।।
चहा की लै भाई बन्दो जब लागी मिट्ठी ।
तबै को गडबडी चहा आंखों मज रींटी ।।

तब का चहा गिलास फीरो में पीवाय ।
मुणी मुणी कनें भया सब चली आय ।।
चहा क असल लागो घरै कै बनछी ।
चहा बनाणी अब भया आइगोछा कैंछी ।।
चहा की कीतली धरनी चुलमा ।
अंगरेज करी गया चहा का जुलम ।।
धीरे-धीरे कर्ने भया दुकानों में चली ।
चार लै गिलास हय ऐक लै कीतली ।।
तब हय भाई बन्दो सस्तक जमाना ।
पांच पैसा गिलास हय गिलास चमकना ।।
ठुल लै गिलास हय भरी वटी दीछो ।
एक गिलास चहा का पांछ पैसा लिछी ।।
पांछ पैसा गिलास में चहा भौत भली ।
साफ लै रहछी उनरा गिलास कीतली ।।
पांच पैस चहा कणी मैहैंगा बतैछी ।
के पीड़ी य चहा कैवे सब झणा कछी ।।
चहा पिवै भाई बन्दो हम लै कै कौंला ।
जहां जै य चहा पीला तहाँ के लिजौंला ।।
मुणी मुणी कना भया पड़ा गोय अमला ।
बुड़ वाड़ो नना तिना सबु पड़ कल ।।
सब हैबै भाई बन्दो चहा चैछ पली ।
सबु का घरमा हुई चहा की कीतली ।।

राती परा से उठा चहा लै बनानो ।
राती परा से उठी बै चहा कणी चानी ।।
चहा बनी नी जै देखी नी लागनी बरकता ।
धन धन य जमाना धन रे बखता ।।
राती परा सबु का घरमा चहा लै बनानी ।
छब्ट छब्ट नना जो छैं ब्यल लिबै आनी ।।
ठुलु हैबैं छल्टों कणी चहा क अमल ।
धन धन चहा कनु धन त्यर कल ।।
सबु हैबै पैली चहा लैकी चैंछा ।
सबुका घरमा भया कीतली बाजीछा ।।
मुणी मुणी कनै भया भौंता चली गेयी ।
चहा क अमल पड़ कसी कस हयी ।।
पैली पैली चहा हुई पांछ डबल गिलास ।
अब देखो भाई बन्दो चहा की तिलास ।।
पांछ की लै दस हई, दस की पन्दरा ।
जतुक मेहंग हैमै वाकी झर फर ।।
अब हैगै चवनी गीलास खुशी हैबै पीनी ।
पच्चीसा का तीस लिले भली बनये कनी ।।
धन धन चहा कनु धन त्यर रोवाज ।
को जमान पैली छिया को जमान आज ।।
चीनी दूध नी लै हय फिकै लै पी जानी ।
चहा चूलम धरी देखी कतुका ऐजानी ।।

कीतोली चूलमा धरी डाली दिनी पत्ती ।
चहा पे बिगड़ी गेई सब झणूं मत्तो ।।
नना तिना सब पोनी ठुल पीनी बुड़ ।
लाल पाड़ी हय भया बलदीया गुड़ ।।
बण घर बटी भया पछोंना लै आनीं ।
छव्टा नना जोंछैं उनरा कीतोली के चानी ।
छव्ट छध्ट ननु कणी चहा लैकी दिनी ।
नी हय दूध उमें भया नो हयो लै चीनी ।।
चीनी दूध के नी देखन फिकैं लै पी जानी ।
ननु कणी चहा नीदी नन रीसै जानी ।।
राती पर से उठी बै चहा लै मागनी ।
कीतोली चूलमा नी देखी ईथा उथा चानी ।।
पांच की पन्दर हयी पन्दरै पच्चीस ।
खाण पिणों के नी चैनी चहा की लै तीस ।।
एक गिलास चहा पाणी पैस चार अना ।
जमानैं पारी आग लैर बधतै पर कना ।।
यतुक महंगाई मज कस लकी कनी ।
छटांग चहा पुड़ी दिय रुपैं कनी ।।
कीलो चहा दाम भया रुपैया अठारा ।
सबु हैगो भाई बन्दो चहा मजा प्यारा ।।
कथै लै के काम हय चहा पाली दीनी ।
आओ बैठो दीदी भुली चहा पिओ कनी ।।

धन धना चहा कनू तिहणी नमना ।
कस आई भाई बन्दो नईया जमना ॥
सुणी लियो भाई बन्दो म्यर समाचार ।
के भल लागुछा भागी कुमाऊँ लै प्यार ॥
इमजी मैंलै लिखी रई नई पुराण बाता ।
जतकणी गलतोयां हुनी दियो म्यर साता ॥
य किताबा लिखी मैंले बिपता का मारी ।
गरीबक च्यल छौं मैं फिकरा लै भारी ॥
जस हल नक भल लगै लिया मन ।
गरीबा हरीश मैंता मैं भूलिया भुना ॥
न जमाना बाता लिखा लिखा लै आपण ।
ऐलै य किताब लिखणा मयू अधीना के हुण ॥
आधीना य लिखण रयू जस हैला गीता ।
नक भल जस हल सुणी लिया भोता ॥
के लिखनू किताबा लै टैमा नीछ मौका ।
किताब लिखण मज पैली बटी शौका ॥
आधिना लै सुणि लियो गीतों का बयाना ।
जै करोला जस करील विष्णु भगवाना ॥
य किताबा मज भया नक भल सबा ।
पहाड़ी कुमाऊँ गीता सुणी लिया अबा ॥

卐

गीत नं. १

असौज महीना म्यरी सासु बिमार।
सासु का लछण देखी सौर तैयार।।
काम धन्धा मौका म्यरो सासु बहाना।
खाण पैलीं खैली पै नी खण बहाना।।
सासु क बहान म्यर मन यस कों।
तुम निखाण पाला मैं प्रदेशा नैहै जाछो।।
प्रदेशा जौला रहौला चैनमा।
सासु जस कली आपण मनमा।।
काम धन्धा मौका य हत्र बहाणा।
लगै असौज बै इनरी निखाणी।।
सौरा टैम पास तम्बाकु पिड़मा।
नो खान मैं खहै नी आनीं मैं नीना।।
सासु को तमासा देखुल पछीना।
असौजा नै गयो सासु सौरा जवाना।।
सासु हाथ बीड़ी सौरा हाथा पान।
आधीना रूणीमा मैं प्रदेशा न्है जुला।।

गीत नं. २

पहाड़ इलैका म्यर अल्मोड़ा जिल बली।
देशा प्रदेशा देख पहाड़ रंगील बली।।
ग्यों जौनु को देछ बली ग्यौं जोनु की देछ।
पहाड़ की आवा भाव बड़ी भली हैंछ।। बली...

च्यल बेटी प्रदेशा जानी मन हो उदास ।
च्यलें प्रदेशा जाण च्यली लै सरास ।।
हमरा किसमत पारी जगा जगो पाड़ी ।
करमा जती लिजा नक नी मानण बली···

देश प्रदेशा भया सब जगा फान ।
चेली ता जवान हई प्रया घरा बान ।।
जय ध्य नक भल सौरास में रण ।
कैकें के कसूस नीछ करमा आपण बली··

करम की रेख को टाई सकूछ ।। बली···
करम की रेख हयो जस लेखो पड़ । बली···
इथा उथा जथा जानु करम दघड़ ।। बली···
चेली बेटीं सौरास जानीं भलीक रय । बली
करमा ता जती लिजा ऊथा जाण हय।।बली···
पहाड़ इलाक मेरो अलमोड़ जिल बली···

卐

गीत नं. ३

म्यरी देश की प्यारो माटी मकणा खें देली ।
जग जग देखी हैछ आपणी माटी भली ।।
टैमा टैमा परि भया बरखा नो हली ।
कसीका हैला डाई बोटो मेरी क्या कली ।।
माटी को मेहनता भागी नो हलीं भरपूरा ।
खेत मजा नाज निहल मट्टी में कसूरा ।।

म्यर देश की प्यारी मिटी मैंकणी खंदेली ।
मेहनता जै भली नी हलो माटी के कली ।।
फिर लै माटी दिई दिछै आपण लै सत ।
खेती का नाज उतुका हल अतुका बहौत ।।
जो पाटइमा चार डाई आंखों मैंरे रीटी ।
राशन पाणी कतुक खानी अपणी खेती मीठी ।।
म्यर देशकी प्यारी माटो मकणी खंदेली ।
कतुका चीजों कमियां हैजें माटी के कली ।।
मौव धरैहै ते माटीमा बहुत हैजा दूर ।
खेता मजा नाज नी हल ते माटीम कसूर ।।
नाज हल जतुका भागी तू सनतना रली ।
खेतों कजा दुबा नी चाड़लु तू माटी केकली ।।
इथां उथां जथां जानु आपणी माटी प्यार ।
ते माटीमा चीज जाननी नैं कतुक हजार ।।
के भली देखीछ भागी वो माटी की छेली ।
खेतों मजा कन-मुना हैला माटो के कली ।।
देशा प्रदेश जथां जानु आपणी माटी भली ।
ते माटीमां जतुके हल खुशी दिललै खेलो ।।
य माटी की सबु कणी करणी हई फामा ।
ते माटोमा जनीमी रयू सब भणा हमा ।।

ते माटी को जतुक सत उतुका दी दीछै ।
चार डाई भल है रया कतुक खुशी हैछ ।।
ते माटी की करण मेहनता है जाछ भरपूरा ।
आपड़ हाथुल नीहै मेहनता माटी कसूरा ।।

●

अपना परिचय

जो कुछा गलता हल मैं माफ करण ।
थोड़ा बात भाई बन्दो लिखनु आपण ।।
सुणी लियो भाई बन्दो य मेरी पुकारा ।
ईष्ट क सुमरण कनु तुमरा अधारा ।।
किताबै कैं पड़ी सुणी लगै लिया मना ।
हरिश चन्द्र नाम म्यर मैं भूलिया भना ।।
आपण पत भाई लिखी दिनु अब ।
सुणी लिया भाई बैणी माफ कया सब ।।
पहाड़ क रणी मैंता मौहणा में गौछ ।
देवतला जात मेरी हरीशचन्द्र नौछ ।।
पाली पछौं रणी मैंता हट्टी तल गेवाड़ ।
मासी में डाकखान म्यर जिल अल्मोड़ा ।।
ईतुका लै बात भाई आपण लेखनु ।
गरोबी जीवन म्यर हाथ जोड़ी कनु ।।
जो कुछ गलतियां हलीं मैं हाथ जोड़नू ।
दिल्ली मजा प्राइवेटा काम मैं करनू ।।

चैत्र नवरात्रों में माता के भक्तों के लिए

नवीनतम भेंट

१. पूर्णागिरि देवी की कथा	१.५०
२. पूर्णागिरि देवी की यात्रा	७५
३. पूर्णागिरि चालीसा	५०
४. पूर्णागिरि इतिहास	५०
५. पूर्णागिरि महात्म्य	१.१०

शुभ सूचना

पूर्णागिरि माता का मेला जिला बरेली पीली[illegible] से आगे टनकपुर जिला पिथौरागढ़ में चैत्र के नवरात्रों [illegible]ता है। माता के दर्शन करके अपनी मनोकामना पूरी क[illegible]। जो भक्तजन माता पूर्णागिरी के दर्शन किसी दुर्भाग्य[illegible] नहीं कर पाते वे उपरोक्त पुस्तकों को अमल में लाकर यात्रा की कामना पूरी कर सकते हैं।

लेखक की आगामी रचना

मां की ममता

पढ़िये !

Kumauni Sahitya Nidhi DELHI-110006